अध्याय 8

याजकों का पवित्रीकरण और निवासस्थान

निवासस्थान पूरा हो चुका था (निर्गमन 40), और परमेश्वर ने वहाँ पर चढ़ाए जाने वाले बलिदानों के सम्बन्ध में निर्देश दे दिए थे (लैव्य. 1-7)। उन याजकों के पवित्रीकरण का समय आ पहुंचा था जो निवासस्थान में बलिदान चढ़ाएंगे। स्वयं निवासस्थान का भी पवित्रीकरण किया जाएगा। "पवित्र" करने का अर्थ "घोषणा करना या पवित्र बनाना है।" याजकों के समाज और निवासस्थान के पवित्रीकरण के लिए सम्पूर्ण मण्डली उपस्थित थी।

अध्याय 8 और 9 उस कहानी को आगे बढ़ाते हैं जो निर्गमन में कुछ समय पहले बताई गई थी। परमेश्वर ने याजकों के समाज के विषय में निर्गमन 28 और 29 में निर्देश दिए, उन वस्त्रों का वर्णन करने के द्वारा जो याजक पहनने वाले थे और यह बता कर की उनका पवित्रीकरण किस प्रकार किया जाना था। उसने मूसा को याजकीय वस्त्रों के विषय में बताया, "अपने भाई हारून और उसके पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहनाकर उनका अभिषेक और संस्कार करना, और उन्हें पवित्र करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें" (निर्गमन 28:41)। उसने मूसा को निर्देश दिए कि अभिषेक तेल किस प्रकार बनाया जाए जिसे केवल पवित्र उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाना था (निर्गमन 30:22-33)। उस तेल के सम्बन्ध में, यहोवा ने कहा,

> और उससे मिलापवाले तम्बू का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का, और सारे सामान समेत मेज़ का, और सामान समेत दीवट का, और धूपवेदी का, और सारे सामान समेत होमवेदी का, और पाए समेत हौदी का *अभिषेक* करना, और उनको *पवित्र* करना, जिससे वे परमपवित्र ठहरें; और जो कुछ उनसे छू जाएगा वह पवित्र हो जाएगा। फिर हारून का उसके पुत्रों के साथ *अभिषेक* करना, और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये *पवित्र* करना (निर्गमन 30:26-30; बल दिया गया है)।

निर्गमन 39:1-31 कहता है कि याजकीय वस्त्रों को निर्गमन 28 और 29 में दिए गए निर्देशों के अनुसार बनाया जाना था। निर्गमन 40:9-15 में, जब निवासस्थान को खड़ा किया जाना वाला था, मूसा को फिर से निवासस्थान और याजकों के समाज के पवित्रीकरण के निर्देश दिए गए थे। निर्गमन निवास स्थान के

खड़े किए जाने के विवरण के साथ समाप्त होता है (निर्गमन 40:17-33) और उस विवरण के साथ भी कि परमेश्वर किस प्रकार उस पर उतर आया ताकि उसकी उसके लोगों के मध्य रहे (निर्गमन 40:34-38)।

इससे पहले कि निवासस्थान का उपयोग किया जा सके, इसके प्रांगण में चढ़ाए गए बलिदानों के लिए नियमों को समझा जाना आवश्यक था। इसकी कारण निवासस्थान के खड़े किए जाने के तुरंत बाद लैव्यव्यवस्था 1-7 में बलिदानों के विषय में नियम दिए गए। पवित्रीकरण, या समर्पण के तुरंत बाद निवासस्थान उपयोग के लिए तैयार हो जाएगा, जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को निर्गमन में आज्ञा दी थी। जो याजक इसमें सेवा करने वाले थे उनका भी पवित्रीकरण किया जाना था। लैव्यव्यवस्था 8 और 9 बताता है कि पवित्रीकरण किस प्रकार पूरा किया गया था।

अध्याय 8 से लेकर 10 तक पुस्तक के अन्य भाग से भिन्न हैं। अध्याय 8 और 9 के पवित्रीकरण की कहानी बताने के बाद, अध्याय 10 परमेश्वर की आज्ञा के उल्लंघन का एक विवरण देता है। एक साथ मिलकर, ये तीनों अध्याय लैव्यव्यवस्था के सम्पूर्ण कथा खण्ड का निर्माण करते हैं।[1] शेष पुस्तक में अधिकांश नियम सम्बन्धी विषय-वस्तु शामिल है जिसे मूसा को एक ऐतिहासिक सन्दर्भ में प्रगट की गई थी।

पवित्रीकरण समारोह की तैयारी करना (8:1-5)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"तू हारून और उसके पुत्रों के वस्त्रों, और अभिषेक के तेल, और पापबलि के बछड़े, और दोनों मेढ़ों, और अख़मीरी रोटी की टोकरी को [3]मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले आ, और वहीं सारी मण्डली को इकट्ठा कर।" [4]यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; और मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा हुई। [5]तब मूसा ने मण्डली से कहा, "जो काम करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है।"

यहोवा ने मूसा को 8:1-5 में निर्देश दिए कि वह पवित्रीकरण के समारोह की तैयारी करे। संस्कार करने के लिए, कई प्रकार की सामग्री को एकत्रित करना पड़ा।

आयतें 1, 2. पाठक यह पूछ सकता है, "कौन से वस्त्र? कौन सा तेल? कौन सा बैल? कौन से मेंढ़े? लैव्यव्यवस्था उन प्रश्नों का उत्तर नहीं देती। हालाँकि, जिसने हाल ही में निर्गमन में परमेश्वर के निर्देशों को पढ़ा है वह उत्तर खोज सकता है क्योंकि आयतें 1 और 2 सीधे उस सम्बन्धित हैं जो परमेश्वर ने **मूसा** को पहले बताया था। **वस्त्र** याजकीय वस्त्र थे, विशेषतः महायाजक की जांघिया, जिसका वर्णन निर्गमन 28 में किया गया है। (इन वस्त्रों के निर्माण के विषय में निर्गमन 39 में दर्ज किया गया है।) **अभिषेक के तेल** का वर्णन निर्गमन 30 में किया गया है। **बैल, दो मेंढ़े,** और **अख़मीरी रोटी की टोकरी** की मांग यहोवा के द्वारा निर्गमन 29:1-3 में की गई थी।[2] लैव्यव्यवस्था 8 और 9 में पाए गए निर्देशों और जो

निर्गमन में लिखा है उसके के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध, पाठक को स्मरण करवाता है कि पेंटाटुएक पांच खण्डों से बनी एक पुस्तक है, पांच अलग-अलग काम नहीं।

आयतें 3-5. मूसा को यहोवा के द्वारा पवित्रीकरण के समारोह का प्रधान ठहराया गया था। यह वही था जिसने याजकों और निवासस्थान का अभिषेक किया, और यह वही था जिसने याजकों के संस्कार से सम्बन्धित बलिदान चढ़ाए। याजकों के समाज के पवित्रीकरण के बाद, केवल उन्हें ही बलिदानों को चढ़ाने का अधिकार था; परन्तु इससे पहले कि उनका पवित्रीकरण किया जाता, किसी और को उन्हें चढ़ाना था। वह कोई और मूसा था, परमेश्वर का विशेष प्रतिनिधि (देखें 8:16, 20 21)।[3]

मूसा को निवासस्थान के सामने **सम्पूर्ण मण्डली को एकत्र**[4] करने की आज्ञा दी गई (8:3)। परमेश्वर के सभी लोगों को पवित्रीकरण समारोह में सम्मिलित होना था। उन्हें याजकीय समाज और निवासस्थान के संस्कारों में स्वयं को एक सक्रिय प्रतिभागी के रूप में देखने की आवश्यकता थी। वे केवल बाहरी या दर्शक नहीं थे; निवासस्थान उनका पवित्रस्थान था, और याजक उनके प्रतिनिधि थे।

इसी के समान एक विषय 8:4 में प्रकट होता है: **मूसा ने ठीक वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।** जब लोग एक साथ एकत्र हो गए, **मूसा** ने उनके सामने उन निर्देशों को दोहराया जो उसने **यहोवा** से प्राप्त किए थे (8:5)। इसी कारण, जो आगे आता है वह उस समारोह का एक विवरण है जिसका निर्देश स्वयं परमेश्वर ने दिया था।

हारून को महायाजकीय वस्त्र पहनाया जाना (8:6-9)

[6]फिर मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को समीप ले जाकर जल से नहलाया। [7]तब उसने उनको अंगरखा पहिनाया, और कटिबन्द लपेटकर बागा पहिना दिया, और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पट्टे से एपोद को बाँधकर कस दिया। [8]और उस ने चपरास लगाकर चपरास में ऊरीम और तुम्मीम रख दिए। [9]तब उस ने उसके सिर पर पगड़ी बाँधकर पगड़ी के सामने सोने के टीके को, अर्थात् पवित्र मुकुट को लगाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

अभिषेक प्रक्रिया में प्रारंभिक कदम हारून महायाजक को विशेष वस्त्र पहनाना सम्मिलित था।

आयत 6. मूसा ने **हारून और उसके पुत्रों** को बुलाया, नादाब, अबीहू, एलिआजार, और ईतामार (निर्गमन 28:1)। **पहले उसने, जल से धोया,** निस्संदेह निवासस्थान के आंगन में रखी हौदी के पानी का उपयोग करके, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार यहोवा ने कुछ समय पहले आज्ञा दी थी (निर्गमन 29:4)। उनका धोया जाना उनके पापों से शुद्ध होने का संकेत था। इस कार्य ने, और इसके आगे अन्य कई कार्यों ने, इस बात पर बल दिया कि जिन याजकों को लोगों के पापों से व्यवहार करने के लिए बनाए गए समारोह का अधिकार दिया गया था उनके स्वयं के पाप

क्षमा होने चाहिए थे।

आयतें 7-9. कथा खण्ड का केंद्र "हारुन और उसके पुत्रों" से स्वयं हारून, महायाजक की ओर मुड़ जाता है। शब्द कहता है कि मूसा ने **उसे अंगरखा पहनाया**, न कि "उन्हें।" अनुच्छेद का शेष यह वर्णन करता है कि मूसा ने किस प्रकार हारुन को महायाजक के वस्त्र पहनाए। "अंगरखा" **एक सनी** का वस्त्र (या अंतर्वस्त्र था), इस प्रकार का वस्त्र सभी याजकों के द्वारा फना जाता था (8:13; निर्गमन 28:39; 39:27)। **कटिबन्द** "सूक्ष्म बंटे हुए सनी" से बना एक वस्त्र था। इसे एक कमरबन्द रूप में उपयोग किया जाता था (निर्गमन 28:39; 39:29)।

बागा महायाजक के द्वारा उसके अंगरखे के ऊपर उसके पद के प्रतीक के रूप में पहना जाता था। इसे सुन्दर सामग्री से बनाया जाता था जिसे बिना सिलाई के बुना जाता था, जो कि, वस्त्र के एक टुकड़े से बनी होती थी (निर्गमन 28:31-35; 39:22-26)।[5]

एपोद[6] एक वस्त्रथा जिसे आम तौर पर एक बनियान या एप्रन की तरह समझा जाता था। अपने सीनाबन्द सहित, यह महायाजक की पहचान करने वाले वस्त्रों की सबसे उल्लेखनीय वस्तु थी। सीनाबन्द को मणियों से सजाया गया था जिन पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम खोदे गए थे। प्रतीकात्मक रूप से, ये तथ्य की गवाही देते हैं कि महायाजक, जब वह पवित्र स्थान और सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश करता था, तो वह साथ पूरे देश को ले जाता था। वह समस्त इस्राएल का प्रतिनिधि था निर्गमन (निर्गमन 28:6-14; 39:2-7)। **एपोद का काढ़ा हुआ** पट्टा स्पष्ट तौर पर ऐसा "पट्टा" था जो एपोद को उसके स्थान पर टिकाए रखता था। इसे निर्गमन 28:8 में "काढ़े हुए पट्टे" के रूप में बताया गया है। बारुक ए. लेविन ने इस प्रकार लैव्यव्यवस्था 8:7 को इस प्रकार अनुवादित किया: "और एपोद लगाकर एपोद के काढ़े हुए पट्टे से एपोद को बाँधकर कस दिया।"[7]

सीनाबन्द (या चपरास) (शाब्दिक तौर पर, "थैली") एक वस्त्र के थैले के समान थी जो महायाजक के एपोद से जुड़ी हुई थी। इस चौकौर थैली को एपोद की सामग्री से ही बनाया गया और इसे बहुमूल्य मणियों से जड़ा गया था (निर्गमन 28:15-29; 39:8-21)।

ऊरीम और तुम्मीम[8] चपरास में रखा जाता था और सम्भवतः दो मणि होते थे जिन्हें एक प्रश्न का उत्तर देने के लिए फेंका (एक पासे की जोड़ी के समान) जा सकता था। उत्तर चाहे सकारात्मक, नकारात्मक, या तटस्थ होता उस पर यह विश्वास किया जाता था (जब तक कि ऊरीम और तुम्मीम को महायाजक के द्वारा उचित ढंग से उपयोग किया जाता था) कि उत्तर परमेश्वर की और से आया था (निर्गमन 28:30)।

पगड़ी "सूक्ष्म सनी" से बना हुआ एक वस्त्र था जिसे सिर पर बांधा जाता था। केवल महायाजक ही पगड़ी पहनता था; अन्य याजक "टोपियाँ" पहनते थे (8:13; निर्गमन 28:39; 39:28)। **सोने का टीका**, या **पवित्र मुकुट**, एक पट्टी थी जिस पर ये शब्द खोदे गए थे "परमेश्वर के लिए पवित्र।" यह महायाजक के द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ी के सामने जोड़ी गई थी (निर्गमन 28:36-38; 39:30, 31)।

महायाजक के द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक आकर्षक थी। यह लोगों को आश्चर्य में डालने की मंशा से बनाई गई थी; यह "महिमा और सुन्दरता" के लिए बनाई गई थी (निर्गमन 28:2)। महायाजक यहोवा परमेश्वर का प्रतिनिधि था और वह कल्पना के योग्य सबसे महत्वपूर्ण कार्य में संलिप्त था। उसकी पोशाक उस कार्य के महत्व को दर्शाती थी जो वह करता था और उस परमेश्वर की महिमा जिसका वह प्रतिनिधि था।

निवासस्थान और याजकों का अभिषेक (8:10-13)

10तब मूसा ने अभिषेक का तेल लेकर निवास का और जो कुछ उसमें था उन सब का भी अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। 11और उस तेल में से कुछ उसने वेदी पर सात बार छिड़का, और कुल सामान समेत वेदी का और पाए समेत हौदी का अभिषेक करके उन्हें पवित्र किया। 12और उसने अभिषेक के तेल में से कुछ हारून के सिर पर डालकर उसका अभिषेक करके उसे पवित्र किया। 13फिर मूसा ने हारून के पुत्रों को समीप ले आकर, अंगरखे पहिनाकर, कटिबन्द बाँध के उनके सिर पर टोपी रख दी, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

हारून के एक बार महायाजक के वस्त्रों को पहनने के बाद, संस्कार का कार्य आरम्भ हुआ। अभिषेक समारोहों में "अभिषेक तेल" का उपयोग किया गया था।

आयतें 10, 11. पहले, **निवासस्थान** और उसकी वस्तुओं को **मूसा** के द्वारा **अभिषेक** किया गया। निवासस्थान से जुड़ी हुई सभी वस्तुओं को - होमबलि की **वेदी** सहित, इसके **सभी बर्तनों**, और **कटोरों और इसके पाए** - उनका पवित्रीकरण पूर्ण करने के लिए अभिषेक किया गया। (वेदी और हौदी आँगन में, स्वयं निवास स्थान के बाहर खड़ी थी।) मूसा ने **सात बार** वेदी का अभिषेक किया। "सात" एक सिद्ध, या सम्पूर्ण अंक है। इसी कारण, वेदी पूरी तरह से यह गहन तौर पर अभिषेक की गई। निस्संदेह, इस अभिषेक का परिणाम "निवास स्थान और इसके सभी सामान और बर्तनों" के "परमेश्वर की सेवा के लिए अलग किया जाना था।"[9]

आयतें 12, 13. आगे, हारून, महायाजक, का अभिषेक किया गया। इस प्रकार से, उसे परमेश्वर की सेवा के लिए आधिकारिक तौर पर समर्पित किया गया।

समारोह में क्या हुआ उसके लिए कुछ मुख्य शब्दों को इस अध्याय में बताया गया है। निर्गमन 28:41 में, मूसा को हारून और उसके पुत्रों के विषय में आज्ञा दी गई थी, "अपने भाई हारून और उसके पुत्रों को ये ही सब वस्त्र पहिनाकर उनका *अभिषेक* और *संस्कार* करना, और उन्हें *पवित्र* करना कि वे मेरे लिये याजक का काम करें" (बल दिया गया है)। शब्द "अभिषेक" (מָשַׁח, *मशाक)* पुराने नियम में किसी व्यक्ति या किसी वस्तु को (आमतौर पर उसके सिर पर) तेल या अन्य कोई पदार्थ लगाने का सन्दर्भ देता है। यह उस व्यक्ति या वस्तु को एक विशेष उद्देश्य के लिए अलग करने हेतु किया जाता था। शब्द "संस्कार" (इब्रानी वाक्यांश से अनुवाद किया गया जिसका अर्थ है "उनके हाथ भरना") किस व्यक्ति के किसी विशेष कार्य

या पद के लिए आधिकारिक तौर पर नियुक्त करने का संकेत करता है। शब्द "पवित्रीकरण" (מִלֻּאִים, *क़दाश*) इस सन्दर्भ में किसी व्यक्ति के एक पवित्र पद के लिए नियुक्त करने के विषय में है; वह जो "यहोवा के लिए पवित्र किया गया है" और उसे यहोवा के द्वारा उसकी सेवा करने के लिए अलग किया गया है।[10]

इसके बाद, **हारून के** पुत्रों - स्पष्ट तौर पर, सभी चारों को - **वस्त्र** पहनाए गए जो सभी याजकों के लिए एक समान थे। उन्हें याजकीय **अंगरखे**, **कटिबन्द बाँध** के, और उनके सिर पर **टोपियाँ** रख दीं (देखें निर्गमन 28:40)।[11]

पवित्रीकरण समारोह (8:14-30)

पवित्रीकरण समारोह में बलिदान का चढ़ाना और याजकों का दूसरा अभिषेक हुआ करता था। याजकीय कार्य के अभिषेक की प्रक्रिया में तीन बलि चढ़ाए जाते थे: पापबलि के लिये एक बछड़ा (8:14-17), होमबलि के लिये एक मेढ़ा (8:18-21), और "संस्कार की भेंट" (8:22-29) के लिये एक और मेढ़ा। इन बलिदानों में लैव्यव्यवस्था 1-7 में वर्णित पहले चार प्रकार के बलिदान शामिल थे। अध्याय 8 के बलिदान की समानता अध्याय 4 में पापबलि की और अध्याय 1 में होमबलि से की जाती है; और "संस्कार की भेंट" की विशेषताएँ दोनों अध्याय 3 में "मेलबलि" और अध्याय 2 में "अन्नबलि" के साथ की गई हैं। क्योंकि ये बलिदान संस्कार समारोह के हिस्से थे, इसलिये लैव्यव्यवस्था 1-7 के निर्देश मिलापवाले तम्बू के सामने दिए जाने होते थे और याजकों को पवित्र किया जाता था।

इन सभी बलिदानों की आवश्यकता क्यों थी? शायद वे याजक के अभिषेक की ओर आगे बढ़ने का प्रतिनिधित्व करने की इच्छा रखते थे। (1) याजक को शुद्ध करने के लिये क्षमा किए जाने की आवश्यकता थी। यह शुद्धि पापबलि के माध्यम से पूरी की जाती थी। (2) उन्हें स्वयं को पूरी रीति से परमेश्वर को समर्पित करने की आवश्यकता होती थी, और उनके समर्पण को होमबलि द्वारा दर्शाया जाता था। (3) विशेष कार्य करने के लिये वे विशेष रूप से पवित्र किए जाते थे, या अलग किए जाते थे; और उस उद्देश्य को "संस्कार की भेंट" के माध्यम से प्राप्त किया जाता था।

पापबलि के रूप में बछड़े का बलिदान (8:14-17)

[14]तब वह पापबलि के बछड़े को समीप ले गया; और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ पापबलि के बछड़े के सिर पर रखे। [15]तब वह बलि किया गया, और मूसा ने लहू लेकर उंगली से वेदी के चारों सींगों पर लगाकर पवित्र किया, और लहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया, और उसके लिये प्रायश्चित्त करके उसको पवित्र किया। [16]और मूसा ने अंतड़ियों पर की सब चरबी, और कलेजे पर की झिल्ली, और चरबी समेत दोनों गुर्दों को लेकर वेदी पर जलाया। [17]परन्तु बछड़े में से जो कुछ शेष रह गया उसको, अर्थात् गोबर समेत उसकी खाल और मांस को

उसने छावनी से बाहर आग में जलाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

पापबलि के लिये चढ़ावा एक बछड़े के बलिदान के साथ शुरू होता था।

आयतें 14-17. बछड़े को लैव्यव्यवस्था में पहले पाए गए **पापबलि** के लिये दिए गए नियमों के अनुसार बलि चढ़ाया जाता था। मूसा बछड़े को लाता था। **और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ** [उसके] **सिर पर रखे**, प्रतीकात्मक रूप से उनके पापों को (8:14) रखते थे। मूसा ने बछड़े को बलि किया; तब उसने उसके कुछ लहू को होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाया और लहू को वेदी के पाए पर उंडेल दिया। ऐसा करने में, उसने **वेदी को पवित्र किया**, **उसके लिये प्रायश्चित किया**, और **उसको पवित्र किया** (8:15)। वेदी को किसी भी अशुद्धता से शुद्ध करने के लिये पवित्र होने की आवश्यकता होती थी - इससे पहले कि उसका उपयोग परमेश्वर के लोगों के पापों को क्षमा करने के किया जाता। वेदी पर पापबलि के लहू को लगाने से इस उद्देश्य की पूर्ति की जाती थी, साथ ही हारून और उसके पुत्रों के लिये प्रायश्चित्त भी प्रदान किया गया। लहू की विधि समाप्त होने के बाद, मूसा ने बछड़े के **चरबी** वाले भाग को **वेदी** पर चढ़ाया और अनुपयोगी हिस्सों को **छावनी से बाहर आग में जलाया** (8:17)।[12] पाप बलि ने सम्भावित याजकों को उन लोगों में बदल दिया जिन्हें परमेश्वर अपनी सेवा में उपयोग कर सकता था : वे लोग जो उनके पापों से शुद्ध हो गए थे।

होमबलि के लिये पहले मेढ़े का बलिदान (8:18-21)

[18]फिर वह होमबलि के मेढ़े को समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। [19]तब वह बलि किया गया, और मूसा ने उसका लहू वेदी पर चारों ओर छिड़का। [20]तब मेढ़ा टुकड़े टुकड़े किया गया, और मूसा ने सिर और चरबी समेत टुकड़ों को जलाया। [21]तब अंतड़ियाँ और पाँव जल से धोये गए, और मूसा ने पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाया, और वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य हो गया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

अभिषेक प्रक्रिया को पूरा करने के लिये होमबलि के लिये दूसरा आवश्यक चढ़ावा एक भेड़ का बलिदान था।

आयतें 18-21. पहले **मेढ़े** के बलिदान ने लैव्यव्यवस्था 1 में होमबलि के लिये स्थापित प्रक्रम का पालन किया। मूसा ने मेढ़े को समीप लाया, **और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ** [उसके] **सिर पर रखे** (8:18), उसको **बलि किया** गया; और उसके **लहू को वेदी** पर **छिड़का** (8:19)। तब **मेढ़ा** को **टुकड़े टुकड़े** किया गया (8:20), इसके कम वांछनीय हिस्सों को **जल** से **धोया जाता** था, और पूरे जानवर को **वेदी पर** जला दिया जाता था। इस प्रक्रिया के माध्यम से, वह एक **सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि** और **यहोवा के लिये हव्य** ठहरता था

(8:21)।

शायद, जैसा कि पहले बताया गया था, होमबलि का उद्देश्य परमेश्वर के लिये समर्पण का प्रतीक था। क्योंकि होमबलि को पूरी तरह से आग से जलाया जाता था, जो मनुष्य इसे चढ़ाता था वह स्वयं को पूरी रीति से परमेश्वर को देने का वचन देता था। इस रीति से, याजकीय पद परमेश्वर की सम्पत्ति बन जाता था। यह समझते हुए कि, परमेश्वर का उनपर अधिकार होता था, याजकों के पास वचनबद्धता की भावना होती थी जिसने उन्हें परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूरी रीति से अधीन बना दिया था।

संस्कार की भेंट के लिये दूसरे मेढ़े का बलिदान (8:22-29)

22फिर वह दूसरे मेढ़े को जो संस्कार का मेढ़ा था समीप ले गया, और हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। 23तब वह बलि किया गया और मूसा ने उसके लहू में से कुछ लेकर हारून के दाहिने कान के सिरे पर और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठों पर लगाया। 24और वह हारून के पुत्रों को समीप ले गया, और लहू में से कुछ एक एक के दाहिने कान के सिरे पर और दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठों पर लगाया; और मूसा ने लहू को वेदी पर चारों ओर छिड़का। 25और उसने चरबी, और मोटी पूंछ, और अंतड़ियों पर की सब चरबी, और कलेजे पर की झिल्ली समेत दोनों गुर्दे, और दाहिनी जाँघ, ये सब लेकर अलग रखे; 26और अख़मीरी रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे रखी गई थी उसमें से एक रोटी, और तेल से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक रोटी लेकर चरबी और दाहिनी जाँघ पर रख दी; 27और ये सब वस्तुएँ हारून और उसके पुत्रों के हाथों पर धर दी गईं, और हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाई गईं। 28तब मूसा ने उन्हें फिर उनके हाथों पर से लेकर उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया, यह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये संस्कार की भेंट और यहोवा के लिये हव्य था। 29तब मूसा ने छाती को लेकर हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाया; और संस्कार के मेढ़े में से मूसा का भाग यही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

याजक के अभिषेक को पूरा करने के लिये एक तीसरा बलिदान, जिसके लिये एक और मेढ़े की आवश्यकता होती थी।

आयतें 22-29. उस **दूसरे मेढ़े को संस्कार का मेढ़ा** कहा जाता है। उसके चढ़ावे में कई चरणों के साथ एक जटिल विधि शामिल होती थी। पहले, मूसा मेढ़ा को **समीप ले** जाता (8:22)। उसने इस समारोह में एक याजक की क्षमता में सेवा की। इसके बाद, **हारून और उसके पुत्रों ने अपने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखते** (8:22), इस प्रकार मेढ़ा को उनके चढ़ावे के रूप में दावा किया जाता और प्रतीकात्मक रूप से उनके पापों को स्थानान्तरित किया जाता था। और तब **मूसा** मेढ़ा को **बलि** करता (8:23) था।

परमेश्वर के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, मूसा ने **लहू** में से कुछ **लेकर हारून के दाहिने कान के सिरे** पर और कुछ **उसके दाहिने हाथ** और **कुछ उसके दाहिने पाँव के अंगूठों** पर लगाया (8:23)। फिर उसने **हारून के पुत्रों** के लिये भी ऐसा ही किया (8:24)। इस विधि के बारे में, आर. के. हैरिसन ने यह निर्णय दिया: "एक सांकेतिक भाव में पूरे शरीर को परमेश्वर की सेवा में पवित्र किया जाता था, और स्मरण करने के द्वारा याजक प्रतीकात्मकता में निहित दायित्वों को स्वीकार करता था।"[13] एक मनुष्य जिसके कान (शायद उसके सिर के लिये), हाथों के अंगूठे (अर्थात् उसके हाथ), और पाँव के अंगूठें (उसके पैरों को बताते हों) परमेश्वर को समर्पित थे बल्कि पूरी रीति से वह उसले लिये समर्पित था। उसके बाद परमेश्वर की आज्ञाओं को (और उसका सिर उन्हें समझने और करने के लिये निश्चय करने) सुनने के लिये उसके कानों का उपयोग करने की ज़िम्मेदारी थी, उसके हाथ परमेश्वर और मानव जाति की सेवा करने के लिये, और उसके पैरों को वहाँ जाने की जहाँ परमेश्वर ने निर्देशित करता था। **और मूसा ने लहू को वेदी पर चारों ओर छिड़का** (8:24)।

उसके बाद, मूसा ने मेढ़ा के **चरबी** के हिस्से, साथ ही **दाहिनी जाँघ** और तीन प्रकार के अन्नबलि को अलग किया, और उन्हें **हारून** और **उसके पुत्रों** को दिया, जिसने मेढ़ा के इन हिस्सों को **हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाई** (8:25-27)। वे औपचारिक रूप से "हिलाई गईं" (या ऊँचा किया गया) एक संकेत में भेंट के ये हिस्से इंगित करते थे कि वे उन्हें परमेश्वर को समर्पित कर रहे थे। इसलिये, मेढ़ा का बलिदान परमेश्वर के समीप लाया गया - लोगों या मूसा के द्वारा नहीं परन्तु उनके द्वारा जो लोग याजक बनने की प्रक्रिया में थे। मूसा ने हारून से इस हिलाने की भेंट को लिया और उसे **वेदी पर** जला दिया। **यह सुखदायक सुगन्ध देने** के लिये **संस्कार की भेंट और यहोवा के लिये हव्य** (8:28) के रूप में जलाया गया।

अन्ततः, मूसा ने स्वयं के लिये मेढ़ा की **छाती** को लिया और **हिलाने की भेंट के** रूप में **यहोवा के आगे हिलाया** (8:29)। आर. लेआर्ड हैरिस हमें स्मरण दिलाते हैं, "सामान्य रूप से हिलाने वाली छाती बलिदान चढ़ाने वाले की ओर से याजकों का हिस्सा हुआ करता था। इस मामले में मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को पवित्र करने के लिये इसे प्राप्त करने वाले याजक के रूप में कार्य किया।"[14]

तेल और लहू से हारून और उसके पुत्रों का अभिषेक (8:30)

[30]तब मूसा ने अभिषेक के तेल और वेदी पर के लहू, दोनों में से कुछ लेकर हारून और उसके वस्त्रों पर, और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़का; और उसने वस्त्रों समेत हारून को भी पवित्र किया।

समारोह के दौरान याजकों के दूसरे अभिषेक के बाद तीन बलिदान चढ़ाए जाते थे। (पहले बलिदान के बारे में 8:10-13 में बताया गया है।)

आयत 30. यह दूसरा अभिषेक पहले से तीन तरीकों से अलग होता है। (1) इस अवसर पर, **अभिषेक के तेल को लहू** में मिलाया जाता था;[15] पहले मामले में, इसका प्रयोग स्वयं के द्वारा किया जाता था। (2) इस बार तेल **हारून** और **उसके वस्त्रों** पर छिड़का गया था; पहले के उदाहरण में, तेल हारून के सिर पर डाला गया था। (3) इस अभिषेक में हारून के **पुत्र** और उनके **वस्त्र** भी शामिल थे; कहा जाता है कि पिछले वर्णन में उनका अभिषेक नहीं किया गया है।

याजकों के इस अभिषेक का क्या अर्थ था? शायद सबसे पहला बलिदान उन बलिदानों के साथ चढ़ावों और विधियों को तैयार करने की इच्छा से किया जाता था, जबकि दूसरा के लिये यह पुष्टि करना था कि विधियों का अपना उद्देश्य पूरा हो चुका था। समारोह के अन्त में, अभिषिक्त लोगों को याजकों के रूप में स्वीकार किया जाना होता था।

अगले सात दिनों के लिये निर्देश (8:31-36)

[31]तब मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, "मांस को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पकाओ, और उस रोटी को जो संस्कार की टोकरी में है वहीं खाओ, जैसा मैं ने आज्ञा दी है कि हारून और उसके पुत्र उसे खाएँ। [32]और मांस और रोटी में से जो शेष रह जाए उसे आग में जला देना। [33]और जब तक तुम्हारे संस्कार के दिन पूरे न हों तब तक, अर्थात् सात दिन तक मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, क्योंकि वह सात दिन तक तुम्हारा संस्कार करता रहेगा। [34]जिस प्रकार आज किया गया है वैसा ही करने की आज्ञा यहोवा ने दी है, जिससे तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए। [35]इसलिये तुम मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक दिन रात ठहरे रहना, और यहोवा की आज्ञा को मानना, ताकि तुम मर न जाओ; क्योंकि ऐसी ही आज्ञा मुझे दी गई है।" [36]तब यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उसने मूसा के द्वारा दी थीं, हारून और उसके पुत्रों ने किया।

अध्याय के अन्त में, मूसा ने "हारून" और "उसके पुत्रों" को आने वाले सात दिनों के दौरान उन्हें जो करना था, के बारे में निर्देश दिए।

आयतें 31, 32. इन आयतों के अनुसार, बलिदान और याजकों के दूसरे अभिषेक के बाद, **मूसा** ने **हारून** से बलि चढ़ाए हुए जानवर(रों) के **मांस को पकाने** के लिये और उस अखमीरी **रोटी** को जिसे दिन के संस्कारों की शुरुवात में **टोकरी** में दी गई थी खाने के लिये कहा। जो कुछ भी **हारून** और **उसके पुत्रों** द्वारा नहीं खाया जाता था उसे जला दिया जाता था; उसे अगले दिन तक नहीं रखा जा सकता था।

आयतें 33-36. अब तक, कई गतिविधियाँ हो चुकी थीं: मिलापवाले तम्बू और उसके घटकों का अभिषेक किया जा चुका था, हारून और उसके पुत्रों का अभिषेक किया जा चुका था, तीन बलि चढ़ाए जा चुके थे, और हारून को बलिदान के मांस खाने के बारे में निर्देश दिए जा चुके थे। फिर भी, और बहुत कुछ किया

जाना बाकी था। पवित्रीकरण की प्रक्रिया और **सात दिनों** तक चलती रहती थी (8:33; देखें निर्गमन 29:35-37)। उस समय, याजकों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रहना होता था। यदि वे चले जाते, तो वे मौत के खतरे में होते थे! याजकों को **दिन और रात** (8:35) मिलापवाले तम्बू परिसर में **ठहरे** रहना होता था। हर दिन एक समान विधियों के बाद एक ही प्रकार के बलिदान किए जाते थे;[16] और याजक अखमीरी रोटी के साथ चढ़ाए गए पशुओं का मांस खाया करते थे।

"संस्कार की अवधि सात [और] दिनों" तक क्यों चल रही थी? प्रस्तुत लेख बताता है कि सात दिन की अवधि हारून और उसके पुत्रों (8:34) के **प्रायश्चित करने के लिये** आवश्यक थी। परमेश्वर के याजकों को पूर्ण रीति से पवित्र होना चाहिए था (और पवित्र समझा जाना चाहिए था)। सम्भवतः बलिदान का सात बार दोहराए जाने से इस आवश्यकता की पूर्ति होती थी। इसके अलावा, सभी इस्राएलियों के देखते हुए, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक सप्ताह तक ठहरे रहने के लिये ज़ोर दिया जाता था कि उस समय से याजकों को सांसारिक कामकाज से अलग किया गया था।[17] वे परमेश्वर को समर्पित थे, उसकी सेवा के लिये दिए गए थे, और उन्हें पूरे राष्ट्र का सहयोग मिलता था जैसा कि वे मिलापवाले तम्बू में उनके कर्तव्यों का निर्वाह किया करते थे। साथ ही, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रहने से यह सुनिश्चित करने में सहायता मिलती थी कि जो लोग नियुक्त किए जा रहे थे, वे किसी भी ऐसी बातों के सम्पर्क में नहीं आ सकते थे जो उस समय उन्हें दूषित कर सकते थे।

सम्भवतः, परमेश्वर ने उन पुरुषों को भी दिया था जो उस समय याजकों के समान कार्य करते थे जो संस्कार के महत्व और उनके कार्य के महत्व को प्रदर्शित करने के लिये सांसारिक अभिलाषाओं से दूर रहते थे। उन्हें महान विशेषाधिकार प्राप्त हुए थे, परन्तु उन विशेषाधिकारों के साथ बड़ी ज़िम्मेदारियाँ भी शामिल होती थीं। परमेश्वर के पवित्र प्रतिनिधियों के रूप में सेवा करना और पवित्र वस्तुओं के साथ अपने कार्य को पूरा करना उन्हें मृत्यु जैसे गम्भीर खतरे में डाल सकता था, यदि वे पवित्र वस्तुओं का उपयोग अनुचित रीति से करते, जैसा कि उनमें से दो लोगों के बारे में जल्द ही चित्रण किया गया (10:1-3)। उनके अभिषेक के सात अतिरिक्त दिनों के दौरान उन्हें बहुत सोच समझ कर चलना पड़ता था।

यह अध्याय **हारून और उसके पुत्रों** की आज्ञाकारिता के मुख्य विचार के साथ समाप्त होता है। हम पढ़ते हैं कि **यहोवा की इन्हीं सब आज्ञाओं के अनुसार जो उसने मूसा के द्वारा दी थीं** (8:36) उन्होंने सब कुछ किया।

अनुप्रयोग

एक मसीही का वस्त्र (अध्याय 8)

निर्गमन 28 और 39 के साथ, लैव्यव्यवस्था 8 हमें मूसा की वाचा के अन्तर्गत याजकों के वस्त्रों का एक चित्र प्रदान करता है। महायाजक के वस्त्र बहुत सुन्दर, परिश्रम से बनाए हुए, और महंगे होते थे। दूसरे याजक भी वस्त्र पहनते थे जो उन्हें

एक साधारण इस्राएली से अलग करते थे।

क्या ये "वस्त्र" इस नए नियम के युग में एक समकक्ष है? मसीह, हमारा महायाजक, महिमा और प्रताप का "वस्त्र" पहने हुए मुसायिक महायाजकों द्वारा पहने हुए वस्त्रों की तुलना में कहीं अधिक सुन्दर दिखाई देता है। पुराने नियम के समय के महायाजक के वस्त्रों के समान कुछ भी पहनने का विशेषाधिकार हमें इस जीवन में नहीं है। इसलिये, क्योंकि मसीही "याजकीय पद" (1 पतरस 2:5, 9) के भागी हैं, क्या हमें ऐसे वस्त्र पहनने चाहिए जो दूसरों से हमें अलग करते हैं?

बहुत से लोग वर्दी पहनते हैं जिसे पहनने से उन्हें उनके काम के साथ पहचान मिलती है। यह सैनिकों, पुलिसकर्मियों, अग्निशामक दल और चिकित्सा कर्मियों के लिये सच है। कुछ संगठन अपने सदस्यों को उनकी बैठकों या सभाओं में वर्दी पहनने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। छात्रों को शाला गणवेश पहनने की आवश्यकता होती है। कुछ धर्मों को कुछ विशेष प्रकार के पोशाक की आवश्यकता होती है, जैसे परदा या सिर ढकना। प्राचीन पुरितन और वर्तमान समय के अमीश अपने पड़ोसियों की तुलना में अलग तरीके से वस्त्र पहनने के लिये जाने जाते हैं।

क्या शास्त्र मसीहियों को अपने आपको बाकी के लोगों से अलग दिखाने के लिये उनसे पोशाक की अनोखी शैली की माँग करता है? इस प्रश्न का उत्तर है "नहीं," जबकि नया नियम मसीहियों को विनम्रता से कपड़े पहनने और गहने पहनने पर बहुत अधिक ज़ोर देने के लिये नहीं सिखाता है, यह नहीं सिखाता है कि मसीहियों को सभी को एक जैसा दिखना चाहिए या एक विशेष प्रकार का वस्त्र पहनना चाहिए जिससे कि उन्हें तुरन्त मसीह के शिष्यों के रूप में पहचाना जा सके।

परन्तु, नया नियम मसीहियों को क्या "पहनना" चाहिए इसके बारे में कुछ बातों को बताता है। उदाहरण के लिये, यह हमें बताता है कि "परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो," जिसमें "सत्य," "धार्मिकता," "मेल के सुसमाचार" "विश्वास," "उद्धार," और "आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है" शामिल हैं (इफि. 6:10-17)। यह कहता है कि, क्योंकि हमने "नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है," इसलिये हमें "बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण" (जैसे वस्त्र पहनना) करना चाहिए, इस रीति से एक दूसरे की सह लेना और एक दूसरे के अपराध क्षमा करना; प्रेम को बाँध लेना, शान्ति हृदय में राज्य करे; और तुम धन्यवादी बने रहो (कुलु. 3:12-15)।

एक प्रकार से, मसीहियों के पास पहनने के लिये एक वस्त्र है। जब वह बपतिस्मा लेने के द्वारा मसीही बन जाता है, तो वह मसीह को पहिन लेता है (गला. 3:26, 27)। उसे मसीह के गुणों (जिनका उल्लेख अभी किया गया) को पहिनते हुए मसीह को पहिन लेना चाहिए। तब लोग जानेंगे कि वह वास्तव में मसीह का शिष्य है।

यद्यपि नया नियम इस जीवन में मसीहियों के लिये विशेष कपड़ों के लिये कोई प्रावधान नहीं देता है, हमें सुसमाचार दिया गया है कि जो लोग विश्वासयोग्य बने रहें, उनके लिये वे एक वस्त्र (प्रका. 3:5) और एक मुकुट (2 तीमु. 4:7, 8) जो

एक और जीवन में उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। हमें अपने कुछ महायाजक की महिमा में साझा करने का विशेषाधिकार मिलेगा, क्योंकि हम यीशु मसीह के साथ अपने सिंहासन पर बैठेंगे (प्रका. 3:21)। यदि हम धरती पर "वस्त्र" पहनते हैं तो स्वर्ग में हमारे पास कितनी महिमामय आशा है!

कलीसिया के अगुवे की पहली ज़िम्मेदारी (अध्याय 8)

कलीसिया के अगुवे-जैसे कि सुसमाचार के अगुवों को परमेश्वर के वचन का पालन करके परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बारे में सबसे अधिक चिन्तित होना चाहिए; परन्तु परमेश्वर का वचन उनकी ज़िम्मेदारी के बारे में क्या कहता है? स्पष्ट है, कि उन्हें परमेश्वर के झुण्ड, परमेश्वर के लोगों, कलीसिया के बारे में चिन्तित होना है। जबकि, उनकी पहली ज़िम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि वे स्वयं परमेश्वर के साथ सही रीति से चलते हैं! पौलुस ने इफिसियों के प्राचीनों से बात करते हुए कहा, "इसलिये अपनी [पहले] और पूरे झुण्ड की [दूसरी] चौकसी करो ..." (प्रेरितों 20:28; NKJV)। कलीसिया के अगुवे को झुण्ड की देखभाल करने से पहले, उसे विश्वास होना चाहिए कि वह स्वयं परमेश्वर के साथ सही रीति से चलता है!

पुरानी वाचा के याजकों को पहले शुद्ध किया जाता था, इससे पहले कि वे दूसरों को मुसायिक बलिदान प्रणाली के माध्यम से शुद्ध करने में सहायता कर सकें। फिर भी, कलीसिया के अगुवे को इससे पहले कि वे उद्धार के सुसमाचार को दूसरों तक ले जाएँ आज यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे मसीह के लहू से शुद्ध किए जाएँ और परमेश्वर के वचन के प्रकाश में चलें (1 यूहन्ना 1:7)।

समाप्ति नोट्स

[1]लैव्यव्यवस्था का एकमात्र अन्य कथा खण्ड 24:10-23 में मिलता है। ये खण्ड निर्गमन की कहानी रेखा का अनुसरण करते हैं। [2]निर्गमन 29 और लैव्यव्यवस्था 8 की तुलना के लिए, कोय डी. रोपर, *निर्गमन*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2008), 475, के चार्ट में देखें। [3]इस परिच्छेद के अनुसार, मूसा ने याजकीय कर्तव्यों को पूरा किया। उसे एक नबी के रूप में भी जाना जाता था और वह इस्राएल का अगुवा भी था, जिसकी अगुवाई एक सीमा तक किसी राजा के समान थी। फिर, एक भाव से, मूसा ने एक नबी, एक याजक और एक राजा के रूप में कार्य किया जिस प्रकार यीशु करता है। [4]टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है कि सम्पूर्ण मण्डली के प्रतिनिधि अवसर के लिए एकत्र हुए थे। एक सभा में इकट्ठे होने के लिए मिस्र छोड़कर आने वाले सैकड़ों हज़ारों लोगों के लिए यह कठिन रहा होगा। [5]यद्यपि यह बिल्कुल समानांतर नहीं है, यह तथ्य कि महायाजक का वस्त्र सिला नहीं गया था, स्मरण दिलाता है कि क्रूस पर मरने से पहले यीशु ने जो अंगरखा पहना था, "वह सिला नहीं गया था, और एक टुकड़े से बुना हुआ था" (यूहन्ना 19:23)। नए नियम के अनुसार, यीशु हमारा महान महायाजक है (इब्रा. 8:1)। [6]"एपोद" शब्द को पुराने नियम में अन्य प्रकार से भी उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, इसे मूर्तिपूजा के अभ्यास के सन्दर्भ में उपयोग किया गया है (न्यायियों 8:22-27; 17:1-5; 18:14-20, 27, 30, 31; 1 शमूएल 21:9)। (जॉन एच. हेस, "एपोद," इन *मर्सर डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एड. वाटसन ई. मिल्स [मेकन, जीए.: मर्सर युनिवर्सिटी प्रेस, 1990], 256.) [7]बारुक ए. लेविन, *लैव्यव्यवस्था*, द जेपीएस टोराह कमेन्ट्री

(फ़िलाडेल्फ़िया: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1989), 50. [8]"ऊरीम" और "तुम्मीम" का अर्थ "प्रकाश" और "सिद्धता" माना जाता है। आर. लेर्ड हैरिस द्वारा वर्णित अन्य संभावनाएं, "शाप" और "सिद्धता" हैं, इसके साथ ही कुछ अर्थ "पहला" और "आखिरी" भी हैं, चूंकि "ऊरीम" के लिए इब्रानी शब्द (אוּרִים) हिब्रू वर्णमाला के पहले अक्षर (א, *एलेफ़)* से आरम्भ होता है और "तुम्मीम" (תֻּמִּים) के लिए इब्रानी शब्द वर्णमाला के अंतिम अक्षर (ת, *ताव)* से आरम्भ होता है। इसका अर्थ ये रहा होगा कि वे सभी सम्भावनाओं में सही उत्तर प्रदान करेंगे। हेरिस ने निष्कर्ष निकाला कि वे एपोद में रखे जाने वाली वस्तुएं थीं जो यहोवा की इच्छा ज्ञात करती थीं सम्भवतः एक प्रकार की पवित्र पर्ची, और जब परमेश्वर का याजक उन्हें उपयोग करता तो उनका मूल्य पर्चियों के गोपनीय व्यवहार से लिया गया था (नीति. 16:33)। (आर. लेर्ड हैरिस, "लेविटिकस," इन *द एक्सपोजिटर्स बाइबिल कमेंट्र,* वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति - गिनती,* एड. फ्रैंक ई. गेबेलेन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1990], 562-63)। एक अन्य लेखक ने दावा किया कि "ऊरीम" और "तुम्मीम" को दो इब्रानी शब्दों से जोड़ा जा सकता है जिनका अर्थ "हाँ" और "न" है। (जॉर्ज ए. एफ. नाइट, लैव्यव्यवस्था, द डेली स्टडी बाइबल [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1981], 50.) [9]क्लाइड एम्. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण,* द लिविंग वे कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट, वॉल्यूम 2 (श्रेवपोर्ट, एल.ए.: लम्बर्ट बुक हाउस, 1974), 20. [10]NASB 8:10 में, जहाँ पर कहती है, कि मूसा ने उन्हें "पवित्र किया," गोर्डन जे. वेन्हम ने इन शब्दों का उपयोग किया "उन्हें शुद्ध किया" (गोर्डन जे. वेन्हम, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 135)। CEV में "मूसा ने ... पवित्र तम्बू को ... संस्कार के तेल में से कुछ छिड़कने के द्वारा यहोवा को समर्पित किया," "पवित्र करने को" "यहोवा को समर्पित करने से तुलना करते हुए है।"

[11]हारून के सभी पुत्र और पुरुष वंशज याजकों के रूप में सेवा करने के योग्य थे, परन्तु केवल एक व्यक्ति एक समय में महायाजक के रूप में सेवा कर सकता था। महायाजकीय समाज एक अनुवांशिक पद बन गया, जिसे पिता से पुत्र को सौंपा जाता था। हारून का उत्तराधिकारी उसका पुत्र एलिआजार था (गिनती 20:23-29), और एलिआजार का उत्तराधिकारी उसका पुत्र पिनहास बना (गिनती 25:1-13)। [12]इस सन्दर्भ में बैल के शेष भाग के बारे में, मांस के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है, जो सामान्य रूप से याजकों द्वारा खाया जाता था। सम्भवतः, बैल का यह भाग मांस के कुछ भाग को प्रदान करता था जिसे हारून और उसके पुत्रों को बाद में पकाने और खाने के लिये कहा गया था (8:31)। [13]आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टमेंट कॉमेन्ट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, आईएलएल.: इंटर-वर्सीटी प्रेस, 1980), 100. [14]हैरिस, 563. [15]अभिषेक तेल के साथ बलिदान के लहू को मिलाना यह संकेत दिया कि लहू प्रायश्चित याजक के अभिषेक का एक अनिवार्य हिस्सा था। [16]"आयत 35 इंगित करता है कि अगले सात दिनों में मूसा ने हारून और उसके पुत्रों के लिये एक समान बलिदान चढ़ाया, जो अभिषेक के महान संस्कार के रूप में उल्लेखित किया गया था" (हैरिसन, 102). [17]पूर्वोक्त।